3. 'सांग' लोकनाट्य की विशेषताओं के आधार पर 'नल-दमयंती' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'नल-दमयन्ती' लोकनाट्य के आधार पर नल की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। (10)

4. 'बिदेसिया' में वर्णित पलायन की समस्या आज भी प्रासंगिक है' स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मंचन की दृष्टि से 'बिदेसिया' की समीक्षा कीजिए। (10)

5. 'राजयोगी भरथरी' में माच लोकनाट्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (10)

अथवा

'राजयोगी भरथरी' की रंगमंचीयता को स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3745 **E**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (DSE) (CORE)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Ramanujan College Library Kalkaji, New Delhi-110019

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अइले कलकातावा त खतवा भेजइते ताबर हो तोर।
रोपेया भेजइत मनीआडर से, गड़यां में होइत सोर।
रोपेया खोंइछवा में लेइ कर, गुनवां गइती हो तोर।
दुअरा पर रहित तकेहू नाहीं देखित करिया -गोर।
सुनरी का लोरवा से चुनरी होखत बा सर हो बोर।
कहत भिखारी चेत अबहूँ से करत बनी निहोर।

अथवा

हमरा के पिया बिसरइहे मति हो ।
बहुत दिनन से आसा लागल पिया
आसा निरासा करइहे मति हो ।
मन में धीरज धरे छाड़े फिकिर पिया
झूठहूँ के जिया हहरइहे मति हो ।
जियरा के मोर तड़पइहे मति हो ।
तोहरे सुरतिया में नैना लागल पिया
अंखिया के मोर तरसइहे मति हो ।

(ख) माया अपरमपार गुरूजी थांकी माया अपरमपार ।।
अपरम पारहे माया आपकी, झून्टो जगबे वार ।।
देखी माया मन हरसाया, केसे करूँ सतकार ।।
चमत्कार देखि ने चितयो, पोंच्यो हात हजार ।।
हिरदा बीच हुदो उजवाली जागी जोत अपार ।
जो मन थो केई दन से मेलो, चड़-चड बिसे बिकार ।।
मल-मल धोय हुवो है उजलो, सतगुरु निमल धार ।।

अथवा

भेद भरी चोपड़ की चाल के, दो राणी समजाय ।।
मन की बात मन में तम राखो, म्हारी समज नी आय ।।
सत्त धरम की चोपड ऊपर, काम क्रोध की गोट ।।
प्रेम से पासा फँको पियाजी, चले चोट पे चोट ।।

तू राणी रंग मेल में राजी, करे रंगीली बात ।।
राज काज को काम पड्योहे, फिकर होए दिन रात ।

(ग) वेद शास्त्र उपनिषेदों का पूर्ण ज्ञान सै,
तप करता इन्द्री बस करके सय्या
गऊ ब्राह्मण साधु को प्यारा करै यज्ञ दान से ।
युध्द करता महारथी तेजस्वी न्यू बलवान सै,
देवत तृप्त रहैं यज्ञ से ज्ञान की परमगति सै ।।1।।

अथवा

सिर पै कलछाया घोर, दिखैं दसूं दिशा कठोर,
ऐश आन्नद की डोरे, हाथ तै छूटी दिखाई दे... ।।1।।
बिस्तर तजकै रूई कैसे पहल, संग मै करण पति की टहल,
वचना मै बन्ध कै गैल हंसणी सी जुटी दिखाई दे... ।।2।।
कित फंसगे कर्म गन्दे मै, लागगी आग भले धन्धे मै,
कलयुग आळे फन्दे मै, घिटी घुटी दिखाई दे.. ।।3।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य परम्परा के सन्दर्भ में 'रामलीला' के उद्भव और विकास को रेखांकित कीजिये ।

अथवा

पांडवानी लोकनाट्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परंपरा का उल्लेख कीजिए ।

(15)